IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदायल उपाध्याय और महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ ० सुनीता सहायक आचर्य

अंजना ठाकुर शोधार्थी

दीनदायल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविधालय,धर्मशाला

शोधसार :- पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी भारतीय विचारकों में से एक है। दोनों का ध्येय नैतिक एवं आत्मनिर्भर समाज की स्थापना करना था। राजनीति के लिए दोनों ही नैतिक मूल्यों को आवश्यक मानते थे।उपाध्याय और गांधी ने आध्यात्मिकता,संस्कृति, जनकल्याण को अपने विचारों के केंद्र में रखा था। दीनदयाल के विचार स्वतंत्र भारत को सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं राजनीतिक स्थायित्व देने की क्षमता रखते हैं। उपाध्याय के राजनीतिक विचार का आधार एकात्म मानव दर्शन था। इस दर्शन में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र सभी के समन्वित उत्थान पर जोर दिया गया है। इनका मानना था कि भारतीय राजनीति को पश्चिमी मॉडल की कॉपी की जगह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव होना चाहिए। दीनदयाल ने स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, धर्म पर आधारित जीवन दृष्टि एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपने राजनीति चिंतन का मूल आधार बनाया है। दोनों का ऐसा कथन था कि राजनीति यदि समाज से अलग हो जाए तो वह स्वार्थ, भ्रष्टाचार की ओर बढ़ती है। दोनों ने ही आध्यात्मिकता, जनकल्याण को अपने विचारों का केंद्र बनाया था। महात्मा गांधी के विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम को दिशा और दशा तय करने का प्रयत्न किया था। गांधी की राजनीतिक दृष्टि, अहिंसा, सत्य, ग्राम स्वराज पर ही आधारित थी। राजनीति को नैतिकता से जोड़कर सेवा का माध्यम मानते थे। उनका ऐसा मानना था कि भारत की आत्मा गांव में निवास करती है। आत्मनिर्भर ग्राम व्यवस्था ही एक ईमानदार लोकतंत्र की नींव हो सकती है। गांधी के कथनानुसार अनुसार सता का केन्द्रीय करण सामाजिक असंतुलन को उत्पन्न करता है, जबकि विकेंद्रीकरण से जन शक्ति का विकास होना आवश्यक है। उपाध्याय और गांधी के राजनीतिक विचार समकालीन भारत के लिए प्रेरणादायक, उपयोगी और प्रासंगिक है।

संकेत शब्द :-राजनीतिक ,राष्ट्र ,स्वदेशी ,सांस्कृतिक,विकेंद्रीयकरण

प्रस्तावना: -प्राचीन समय से ही भारत का राजनीतिक चिंतन सांस्कृतिक चेतना एवं नैतिकता से प्रेरित रहा है। भारत के निर्माण में जिन विद्वानों ने जन चेतना को उजागर किया है, उनमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी का महत्वपूर्ण स्थान है। पश्चिमी राजनीतिक विचारों को दोनों महामानवों ने स्वीकार नहीं किया था। इन्होंने भारत की सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना पर अपनी राजनीतिक अवधारणाएं प्रदान की। राजनीतिक चिंतन में उपाध्याय जी ने एकात्म दर्शन द्वारा समन्वयकारी दृष्टिकोण दिया था। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, ब्रह्मांड के मध्य संतुलन प्रस्तुत किया। उनका विचार था कि भारत की राष्ट्र आत्मा को जाने बिना भी राजनीतिक प्रणाली अधिक नहीं चल सकती। उनका चिंतन राष्ट्रवाद, धर्म , संस्कृति में प्रतिबद्धता को दिखाता है। गांधी ने राजनीति को नैतिकता, सेवा का साधन , राजनीति में सेवा, नैतिकता को मध्य बताते हुए सत्य ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, अहिंसा इत्यादि सिद्धांतों को प्राथमिकता प्रदान की। दोनों का उद्देश्य भारतीय संस्कृति, समाज का नैतिक और समावेशी विकास करना है।

शोध के उद्देश्य: -

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के मौलिक तत्वों का अध्ययन करना।

2. उपाध्याय और गांधी के राजनीतिक अवधारणाओं के तुलनात्मकताओं का विश्लेषण करना। उनके विचारों का आधुनिक भारत के नीति निर्माण में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध विधि: -

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया जाएगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय और गांधी के भाषणों, रचनाओं, ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा उनके राजनीतिक दृष्टिकोण की प्रमाणिकता को सिद्ध किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा :-

गुप्त, के.सी. (2005) की पुस्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण उपाध्याय के विचारों को सामाजिक पुनर्रचना और राजनीतिक संगठन से जोड़ती है। लेखक ने उनके विचारों की भारतीय समाज की आवश्यकताओं से संबद्धता को रेखांकित किया है।उनका एकात्म मानववाद केवल एक दर्शन न होकर,एक व्यवहारिक सामाजिक और राजनीतिक संरचना के रूप में प्रस्तुत किया गया है।गांधी के ग्रामस्वराज की तरह, उपाध्याय का स्वदेशी भी सत्ता को जनता के निकट लाने का प्रयास है।

मिश्र, प्रभाकर (2015) की पुस्तक दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रीय दृष्टिकोण में लेखक ने दीनदयाल उपाध्याय को एक दूरद्रष्टा राजनीतिक विचारक के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक आत्मा के अनुरूप राजनीतिक संरचना की आवश्यकता पर बल दिया। उपाध्याय जी का राष्ट्रवाद व्यक्ति, समाज और प्रकृति के संतुलन पर आधारित था। गांधी भी सत्य और ग्राम केंद्रित राष्ट्रनिर्माण की बात करते थे। यह पुस्तक उपाध्याय के विचारों को समसामयिक राजनीतिक विमर्श से जोड़ती है, जो तुलनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

भारद्वाज, मधुसूदन (2018) की पुस्तक भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका उपाध्याय को भारतीय राजनीति में विचारधारा के पुनर्परिभाषक के रूप में प्रस्तुत करती है। लेखक का मत है कि उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद भारत को पश्चिमी विचारों की छाया से बाहर लाने का प्रयास था। यह गांधी की स्वदेशी और सत्य के प्रयोग जैसी अवधारणाओं से गहरा साम्य रखता है। पुस्तक में उपाध्याय जी की विचारधारा को समकालीन राजनीति से जोड़ने का भी प्रयास किया गया है।

द्विवेदी, सुरेश (2011) की कृति एकात्म मानववाद और भारतीय राजनीति में उपाध्याय जी के दर्शन को भारतीय लोकतंत्र के पुनर्निर्माण का आधार बताया गया है। लेखक ने बताया कि आधुनिक राजनीतिक संरचनाएं जब पश्चिमी मॉडल पर आधारित होती हैं, तब वे भारतीय समाज की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पातीं। उपाध्याय जी का विचार इन्हीं सीमाओं को भारतीय संस्कृति के आलोक में पुनर्परिभाषित करता है।

पारीक , रामचंद्र (2010) ने गांधी विचार और आज का भारत में गांधीवाद को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है।उन्होंने लिखा कि गांधी के नैतिक राजनीतिक विचार आज की राजनीति की गिरती साख के लिए समाधान प्रस्तुत करते हैं।उनका सत्ता के प्रति नैतिक दृष्टिकोण,सत्य और लोकमंगल पर आधारित था। यह पुस्तक गांधी विचारधारा की स्थायित्व और समसामयिकता को स्पष्ट करती है।

शर्मा,शंकर(2007) गांधी दर्शन और भारतीय राजनीति में लेखक ने गांधी के दर्शन और उनके राजनीतिक प्रयोगों के मध्य संबंध को स्पष्ट किया है। उन्होंने राजनीति को आध्यात्मिक नेतृत्व की संज्ञा दी है। पुस्तक में बताया गया है कि गांधी की राजनीतिक रणनीति मानवता के मूल्यों पर आधारित थी। लेखक ने अहिंसा और सत्य के प्रयोग को गांधी की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत माना है। यह पुस्तक उनके दर्शन को राजनीति से जोड़ने का सफल प्रयास है।

त्रिपाठी, हर्षवर्धन(2015) गांधी और आधुनिक राजनीति पुस्तक में लेखक ने गांधी के राजनीतिक सिद्धांतों को वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया है। उन्होंने बताया कि गांधी की राजनीति आम आदमी की शक्ति और चेतना को पहचानने का माध्यम थी।वे सत्ता और प्रशासन के बजाय लोकनीति और जनभागीदारी के पक्षधर थे। पुस्तक में गांधी के विचारों की समकालीन राजनीति में प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है।

पांडेय, बालगोविंद (2003) गांधीवाद और वर्तमान राजनीति पुस्तक में लेखक ने गांधी की विचारधारा को आधुनिक भारतीय राजनीति के संदर्भ में परखा है। उन्होंने दर्शाया कि गांधीवाद नैतिकता, सादगी और जनकल्याण की राजनीति है।उनके राजनीतिक आदर्श आज की स्वार्थपरक राजनीति से पूर्णतः भिन्न थे। पुस्तक में समकालीन चुनौतियों से गांधी विचार की तुलना भी की गई है।

अग्रवाल, रामचंद्र(1992) महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन में लेखक ने गांधी के राजनीतिक विचारों को विस्तार से प्रस्तुत किया है।उन्होंने सत्य,अहिंसा,स्वराज और ग्रामराज की अवधारणाओं को गांधीवादी राजनीति के मूल स्तंभ के रूप में चित्रित किया है। पुस्तक में बताया गया है कि गांधी राजनीति को लोकसेवा, आत्म-नियंत्रण और नैतिकता का साधन मानते थे। लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि गांधी

की राजनीति सत्ता के लिए नहीं, बल्कि समाज के उत्थान के लिए थी। यह ग्रंथ हिंदी माध्यम के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार: -

भारतीय राजनीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने संस्कृति, नैतिक, सेवा के मूल्यों को फिर से स्थापित करने का प्रयास किया था। उनके राजनीतिक विचार सनातन संस्कृति से जुड़े थे। राजनीति का ध्येय सत्ता प्राप्त करना नहीं समाज की सेवा करना है। उन्होंने एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा को हमारे समक्ष रखा। एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के विकास पर ही आधारित है। उनका मानना था कि भारतीय समाज की आवश्यकताएं पश्चिमी मॉडल से बिल्कुल अलग है। भारत को हमेशा ही अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी राजनीतिक प्रणाली को अपनाना चाहिए। राष्ट्र को एक जीवंत इकाई माना है। राजनीति शासन की प्रक्रिया नहीं समाज की नैतिक उन्नति का साधन है। उन्होंने राजनीति को मूल्य निष्ठ सिद्धांत पर आधारित किया। वे लोकतंत्र में बहुमत के शासन को पर्याप्त नहीं मानते थे। नैतिक सांस्कृतिक मूल्य की स्थापना को भी अनिवार्य मानते थे। उपाध्याय राजनीतिक दलों से यह उम्मीद रखते थे कि वह राष्ट्रहित को ही सर्वोपरि माने। वे ऐसी राजनीति चाहते थे जो सता केंद्रित न हो समाज के अंतिम लोगों तक पहुंच सके। धर्म एवं राजनीतिक को अलग नहीं देखना चाहते थे। इसको वे भारतीय परंपरा के विरुद्ध मानते थे। क्योंकि धर्म जीवन का आधार है। उन्होंने राजनीति में धर्म को नैतिक व्यवस्था के रूप में माना। वर्तमान में राजनीति स्वार्थ, सत्ता तक ही सीमित हो रही है। उस समय उपाध्याय का चिंतन एक वैकल्पिक स्थाई मार्ग प्रदान करता है।

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार: -महात्मा गांधी ने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का माध्यम ही नहीं सत्य, सेवा, आत्म शुद्धि का साधन माना था। उन्होंने राजनीति को सत्य, अहिंसा के सिद्धांतों के साथ मिलाकर नैतिकता का आयाम दिया था। उनका मानना था की राजनीति बिना धर्म के पाप है। सेवा एवं नैतिकता के बिना राजनीति भ्रष्ट हो जाती है। राजनीति का ध्येय जन कल्याण होना आवश्यक है सत्ता को प्राप्त करना नहीं। उन्होंने स्वराज को राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं आत्मनिर्भरता, आत्म संयम के रूप में प्रस्तुत किया है। गांव स्वराज का सिद्धांत विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था पर आधारित था। उन्होंने स्वदेशी, कुटीर उद्योग, खादी को राजनीति का भाग बनाकर अर्थनीति एवं और राजनीति को आपस में मिलने का काम किया। उनका मानना था की राजनीति में शुचिता, सत्य निष्ठा, त्याग, जनता के प्रति उत्तरदायित्व का होना जरूरी है। शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य जैसे विषयों को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया। वर्तमान युग में महात्मा गांधी के विचार सेवा प्रदान स्वच्छ, विकेंद्रित लोकतंत्र के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। राजनीति में जब नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है तब उनके विचार शुद्ध नैतिक, समर्पित राजनीति का मार्ग दिखाते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की तुलना: -

उपाध्याय की राजनीति आध्यात्मिक सामाजिक कर्तव्यों पर आधारित थी। महात्मा गांधी की राजनीति आध्यात्मिकता व्यक्तिगत साधना का भाग थी। उपाध्याय का विचार भारत की आत्मा के सांस्कृतिक

राष्ट्रवाद के बीच में था। गांधी का राजनीतिक दर्शन वैश्विक शांति की दिशा की ओर था। उपाध्याय ने राजनीति को संस्कृत, धर्म का आधार मानकर लोक सेवा का साधन कहा। दूसरी और गांधी ने राजनीति को सत्य, अहिंसा पर आधारित नैतिक माध्यम माना। दोनों विद्वानों में कुछ समानताएं और कुछ असमानताएं भी हैं। जो इस प्रकार हैं: -

समानताएं:- दोनों विद्वानों ने भारतीय मूल्य पर आधारित वैकल्पिक राजनीतिक दर्शन प्रदान किया है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधनों की पवित्रता होना अनिवार्य माना है। पश्चिमी मॉडल की अपेक्षा भारतीय मॉडल को प्राथमिकता दी गई है। उपाध्याय ने धर्म, सत्य को एकात्म मानव दर्शन की आत्मा माना है। वही गांधी ने सत्य को एक जीवन मूल्य माना है। दोनों सामाजिक न्याय, समानता पर आधारित प्रणाली के समर्थक थे। स्वदेशी, कुटीर उद्योगों को प्राथमिकता प्रदान की गई। उपाध्याय और गांधी ने राजनीति को सेवा, समर्पण, नैतिक नेतृत्व का रास्ता माना है।

असमानताएं:- पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी की राजनीतिक कार्यशैली अलग-अलग थी। उपाध्याय का राजनीतिक लक्ष्य राष्ट्र जीवन, एकात्म मानव दर्शन का क्रियान्वयन था। दूसरी तरफ महात्मा गांधी के लिए राजनीति नैतिक थी। गांधी का योगदान स्वतंत्रता के दौरान था। उपाध्याय स्वतंत्र भारत के विचारक वैकल्पिक प्रणाली के प्रस्तावक रहे थे। धर्म को राष्ट्रीय जीवन का मूल आधार माना। गांधी धर्म को सार्वभौमिक नैतिक मूल्य भी मानते थे। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे। धर्माधारित समग्र आर्थिक विकास की बात उपाध्याय ने की।

तुलनात्मक विश्लेषण :- पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी दोनों ने भारतीय राजनीति को नैतिकता और अध्यात्म से जोड़ा। गांधी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सत्याग्रह और अहिंसा को समाज परिवर्तन का साधन बनाया, वहीं उपाध्याय ने स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण के लिए एकात्म मानववाद को दार्शनिक मार्गदर्शक सिद्धांत बनाया।गांधी के चिंतन में व्यक्ति का नैतिक उत्थान केंद्रीय तत्व है, जबकि उपाध्याय के चिंतन में व्यक्ति और समाज की एकात्मता प्रमुख है। गांधी का दृष्टिकोण क्रियात्मक और जनसामान्य के निकट है, जबकि उपाध्याय का दृष्टिकोण दार्शनिक और समन्वयकारी है।दोनों ने भारतीय राजनीति को पश्चिमी प्रभाव से मुक्त कर स्वदेशी, नैतिक और मानवोन्मुख दिशा दी। इस प्रकार गांधी ने "स्वराज्य" का मार्ग दिखाया और उपाध्याय ने "सुराज्य" की दिशा प्रदान की।इन दोनों की विचारधाराएँ आज भी भारतीय लोकतंत्र और नीति-निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

उपाध्याय और गांधी के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता: -आज के समय में उपाध्याय और गांधी के राजनीतिक विचार सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिक होते हैं। एकता मानव दर्शन के द्वारा उपाध्याय ने भारत की सांस्कृतिक पहचान आधार बनाकर राजनीति को समाज के समग्र विकास से मिलाया है। गांधी का जोर आत्मनिर्भर ग्राम व्यवस्था, अहिंसा, सत्य के मार्ग पर आधारित लोकतंत्र नैतिक नेतृत्व पर था। दोनों विद्वानों में भारतीयता की गहनतम समझ थी। जो वर्तमान की विदेशी मॉडल आधारित नीतियों के बीच संतुलन बनाए रखने में सहायक है। दोनों महामानवों की विचारधारा

राष्ट्र के कदम को आधार प्रदान करते हैं। यदि भारत की राजनीति उपाध्याय एवं गांधी के दर्शन पर चले तो राष्ट्र भौतिक रूप में ही नहीं आत्मिक नैतिक रूप से भी समृद्ध राष्ट्र बन सकता है।

उपाध्याय और गांधी दोनों ही भारतीय राजनीति को केवल सत्ता का संघर्ष नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक आंदोलन मानते थे। दोनों के विचारों में स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, नैतिक शासन और समाजोन्मुख दृष्टिकोण की प्रमुखता है। आज के समय में जब राजनीति मूल्यों से हटकर रणनीति पर केंद्रित हो गई है, इन दोनों विचारकों का चिंतन भारतीय लोकतंत्र को पुनः मूल्य आधारित और जनोन्मुख बनाने का मार्ग दिखाता है। इसीलिए इनकी विचारधारा आज भी न केवल प्रासंगिक है, बल्कि अत्यंत आवश्यक है।

दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच समन्वय का संदेश देता है। यह विचार आज के जलवायु संकट, सामाजिक विघटन और व्यक्तिवादी राजनीति के दौर में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने आर्थिक प्रगति को केवल उपभोग केंद्रित न मानकर, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने का आग्रह किया। उनका दर्शन संपूर्ण मानवता की एकता की बात करता है, जो सतत विकास लक्ष्यों से मेल खाता है। गांधी की राजनीति में सत्य और नैतिकता के मूल्यों को अत्यंत महत्त्व दिया गया है। आज के समय में जब राजनीतिक भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और स्वार्थपरता बढ़ रही है, तब गांधी की राजनीति की नैतिकता एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करती है। उन्होंने कहा था,राजनीति बिना धर्म के शैतानी हो जाती है।उनका यह कथन आज के राजनैतिक विमर्श में विवेक और उत्तरदायित्व की आवश्यकता को रेखांकित करता है।उपाध्याय एवं गांधी का चिंतन पर्यावरण, विकेन्द्रीकरण, मानव मूल्यों की आज भी प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष:- अंततः हम यह कह सकते हैं कि दोनों ही भारतीय राजनीति को सांस्कृतिक, लोक कल्याणकारी, नैतिक रूप देने के पक्ष में थे। उनके विचारों की दिशा, कार्य करने की पद्धति, प्रेरणा स्रोत में कुछ अंतर रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानव दर्शन के माध्यम से भारतीय परंपराओं, संस्कृति पर आधारित समावेशी राजनीतिक दर्शन हमारे समक्ष रखा। दूसरी तरफ गांधी ने राजनीति को अहिंसा, आत्मबल, सेवा के द्वारा समाज सुधार का यंत्र माना है। दोनों मनीषी राजनीतिक दर्शन का समन्वय आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक, समरस भारत को जागरूक राष्ट्र के रूप में विकसित करने में सहायक है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी का उद्देश्य एक ही था – नैतिक, सांस्कृतिक और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण। दोनों ने भारतीय समाज को पश्चिमी अवधारणाओं से मुक्त कर स्वदेशी चिंतन पर आधारित राजनीतिक ढाँचे की कल्पना की। आज दोनों विचारकों के दर्शन न केवल प्रेरणादायक हैं, बल्कि मार्गदर्शक भी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

झा,प्रभात,पंडित दीनदायल उपाध्याय:दर्शन और दृष्टि.नई दिल्ली:सुरुचि प्रकाशन. 2014.

उपाध्याय,दीनदायल. एकात्म मानवदर्शन.नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग. भारत सरकार.1965.

रामबहादुर,रॉय दीनदायल उपाध्याय सम्पूर्ण वांगमय खंड 1-15 भारतीय विचार संस्थान.2020.

गांधी,महात्मा.हिन्द स्वराज.अहमदाबाद :नवजीवन ट्रस्ट.1959.

गांधी, मोहनदास.करमचंद.सत्य के प्रयोग. नवजीवन ट्रस्ट.1927.

Upadhyaya, Deendayal. Integral Humanism. Bhartiya Janata Party Publications.1965.

Chandra, Bipan. India's Struggle for Independence. Penguin Books.1989.

Nanda, B.R. Mahatma Gandhi: A Biography. Oxford University Press. 1958.

Sharma, Radhakrishna. Pandit Deendayal Upadhyaya: Ideology and Philosophy. Prabhat Prakashan. 2002.

द्विवेदी, सुरेश. एकात्म मानववाद और भारतीय राजनीति.ज्ञान गंगा, 2011.

पारीक, रामचंद्रा. गांधी विचार और आज का भारत. नवजीवन ट्रस्ट, 2010.